सृष्टि का प्रयोजन : लीलावाद एवं अनुग्रह

सृष्टि के प्रयोजन की दृष्टि से काश्मीरीय शैव दर्शन, शैवसिद्धान्त आदि दार्शनिक सम्प्रदायों में दृष्टिभेद है।अद्वैत शैव मत अनुसार 'सृष्टि' शिव की लीला है। शिव 'लीला' के लिए ही सृष्टि करता है। सृष्टि को किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया गया कोई समारम्भ नहीं मानता। उसके अनुसार सृष्टि निष्प्रयोजन है। शिव स्वात्मोल्लास, स्वानन्दाभिव्यक्ति, आत्मानन्दोच्छलन के लिए सृष्टि करता है। सृष्टि और प्रलय अर्थात् 'सृजन' और 'संहार' शिव का स्वभाव है। जिस प्रकार स्वभाव कभी भी सोद्देश्य नहीं होता, बल्कि सत्ता का अभिन्न अंग होता है, उसी प्रकार सृष्टि-प्रलय अर्थात् सर्जन एवं संहार भी शिव की स्वभावाभिव्यक्तियाँ हैं। 'सृष्टि' शिव की आनन्दक्रीड़ा है, लीलाविलास है। सृष्टि निराकांक्ष, आनन्दकन्द शिव के आत्मविनोद की मधुर क्रीड़ा है। शैव सिद्धान्त दृष्टि में शिव का अपने लिए सृष्टि करना भी सम्भव नहीं है, क्योंकि शिव स्वयं में अपूर्ण तो है नहीं कि वह अपनी कमी को पूरा करने के लिए सृष्टि करता। चूँकि अपने आनन्द,

अपने कल्याण एवं अपनी मुक्ति के लिए आत्माओं को शिव की आवश्यकता है; अत: कल्याणस्वरूप शिव इन अनन्त भटकती, बन्धनग्रस्त एवं माया से सन्त्रस्त तथा मल-परिबद्ध आत्माओं के कल्याण, उनकी मुक्ति एवं उनके प्रति अपने करुणाजन्य वात्सल्य के लिये सृष्टि करता है। यही सृष्टि का उद्देश्य है। अद्वैतवादी शैव दर्शन में सृष्टि शिव के आत्मविनोद का परिणाम है तो शैव सिद्धान्त में प्रेम का।

सृष्टि का प्रेरणा-केन्द्र- सृष्टि करने के लिये कौन-सी प्रेरणा प्रभविष्णु होती है? सृजन का मूल उत्स क्या है? सृष्टि क्यों की जाती है? -

इन सभी प्रश्नों का उत्तर विभिन्न दार्शनिकों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से दिया है। शाक्त दर्शन इसका मूल तत्त्व आत्मविनोद, स्वभाव, स्वेच्छा, लीला, क्रीड़ा एवं चित्र-सृजन को मानता है।

शैवसिद्धान्त इसका मूल उत्स प्रेम या करुणा को मानता

है। यह प्रेम, करुणा या अनुग्रह ही सृष्टि के मूल में निहित है। शिव आत्माओं से प्रेम रखने के कारण सृष्टि करता है।

काश्मीरीय शैवमत सृष्टि की व्याख्या 'स्वातन्त्र्यवाद' के आधार पर करता है। शिव सृष्टि करने, न करने एवं अन्यथा करने आदि सभी में समर्थ है। जबकि शैवसिद्धान्ती मानते हैं कि जगत् अपने मूल रूप में माया के गर्भ में रहता है और शिवेच्छा से व्यक्त होता है। यह शिवेच्छा की मान्यता तो शैवसिद्धान्तियों को भी 'स्वातन्त्र्यवाद' के निकट ला देती है, किन्तु वे सृष्टि की व्याख्या शिव के अनुग्रह एवं प्रेम के सिद्धान्त के आधार पर करते हैं। प्रेम में भी स्वातन्त्र्य तो निहित है ही, क्योंकि प्रेमजन्य कार्य करने के लिए प्रेमी बाध्य नहीं होता। काश्मीरीय शैव दर्शन आभासवादी है। शिव स्वतन्त्र, शक्तिसंवलित, विश्वमय, विश्वोत्तीर्ण, इच्छा-ज्ञान-क्रियारूप एवं चेतन है।

काश्मीरीय शैव दर्शन में ज्ञान के प्रति विशेषाग्रह है। इसका लक्ष्य है- शिवज्ञान की प्राप्ति और शैव सिद्धान्त में शिव के सामीप्य के प्रति विशेषाग्रह है; अत: शिवभक्ति

इसका प्रधान साधन है। शिव की प्रत्येक क्रिया प्रेम के कारण है, जबकि काश्मीरीय शैव दर्शन में शिव की प्रत्येक क्रिया 'लीला' है।

योगिनीहृदय में कहा गया है कि षट्त्रिंशदात्म जगत् एक उल्लेख (चित्र) है। इसे भगवती स्वेच्छा-तूलिका से आत्मभित्ति पर निर्मित करती है-

स्वेच्छाविश्वमयोल्लेखखचितं विश्वरूपकम्।

चैतन्यमात्मनो रूपं निसर्गानन्दसुन्दरम्।।

इसी भाव को अन्यत्र भी प्रस्तुत किया गया है-

जगच्चित्रं समालिख्य स्वेच्छातूलिकयात्मनि।

स्वयमेव समालोक्य प्रीणति भगवान् शिवः।।

जगत एक क्रीडा है। स्पन्दकारिका में कहा भी गया है-

इति वा यस्य संवित्तिः क्रीड़ात्वेनाखिलं जगत्।

स पश्यन् सततं युक्तो जीवन्मुक्तो न संशयः।।

इन तीनों उदाहरणों में चित्र या क्रीड़ा का जो उदाहरण दिया गया है, उसका उद्देश्य क्या है? उसका उद्देश्य है-

आत्मानन्द या आनन्दलीला। इसीलिए कहा गया है कि 'इसे देखकर भगवान् शिव प्रसन्न हो उठते हैं। सृष्टि का उद्देश्य भी यही आत्मतुष्टि या आत्मानन्द है।